गुरुघासीदास के मूलभूत सिद्धांतों का अनुशीलन

✍ डॉ. श्रीमती धनेश्वरी दुबे•

प्रस्तावना

गुरुघासीदास बाबा एक महान धार्मिक संत एवं समाज सुधारक थे। उनका जीवन छत्तीसगढ़ की धरती के लिए ही नहीं, अपितु समूची मानव–जाति के लिए कल्याण का प्रेरक संदेश देता है। सतनाम धर्म के प्रवर्तक छत्तीसगढ़ के यह महान पुरुष एक सिद्ध पुरूष होने के साथ–साथ अपनी अलौकिक शक्तियों एवं महा मानवीय गुणों के कारण श्रद्धा से पूजे जाते हैं।

18 वीं सदी के उतरार्द्ध और 19 वीं सदी के पूवार्द्ध में छत्तीसगढ़ के लोगों के सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिये यदि किसी महापुरूष का योगदान रहा है तो सतनाम के अग्रदूत समता के संदेशवाहक और क्रांतिकारी सद्‌गुरु घासीदास है। तत्कालीन समय में छत्तीसगढ के दलित, शोषित पीड़ित समझे जाने वाले लोगों का जीवन बड़ा ही दुखमय था। मानव–मानव में छुआ–छूत, अवर्ण–सवर्ण, उंच–नीच का भेदभाव व्याप्त था। मंदिरों में धर्म–कर्म के नाम पर नरबलि और पशुबलि की परम्परा प्रचलित थी। मंदिर और मठ अनाचार का केन्द्र बने हुये थे। नारी जाति के प्रति शोषण का भाव मंदिरों में भी देखने को मिलता था। तंत्र–मंत्र, टोनही, बैगा, पंगहा आदि अंधविश्वास के नाम पर लोगों को ठगा जा रहा था। धार्मिक साधना का रूप काफी विकृत था। धामिकता की आड़ में लोग मांस और मंदिरा का सेवन कर रहे थे। जनता छोटे राजाओं, पिंडारियों, सूबेदारों के लूट और आतंक से त्राहि–त्राहि कर रही थी। लगान और

• विभागाध्यक्ष, हिन्दी, शासकीय इं.वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा छ.ग.

Scanned with CamScanner
PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAYA P.G. COLLEGE, KORBA (C.G.)
GOVT. E.V.P.G.